B.A. Part 1 | 2 | 22
Hindi Honours

आधुनिक काव्य में प्रकृति को केवल मानव के समान उसके क्रिया कलापों का वर्णन किया है, परन्तु कुछ प्रकृति वर्णन में मानवीय रूप और व्यवहार के अनेक सुन्दर चित्र उभरे हैं। पंत की ज्योत्स्ना, जयशंकर प्रसाद की चाँदनी आदि कविताएँ मानवीकरण के रूप में प्रकृति चित्रण के उत्तम उदाहरण हैं। ज्योत्स्ना की शोभा के चित्रण में मानवीय रूप और व्यवहार और साज सज्जा का इतना सजीव वर्णन हुआ है कि वह सजीव सी लगने लगती है। उसी दृश्य को देखकर पंत कहते हैं कि —

"तापस बाला गौर निराला।"

पंत की कई कविताओं में प्रकृति के सौन्दर्य के अनेक रूप उभरे हैं जिनमें मानव भावना का व्यापक प्रसार देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए इन्दु सुख पर' पंक्तियों को लिया जा सकता है। इसमें उषा सुन्दरी और रूपसी कवि के सामने खिला हुआ मधुर मुख। उषा सुन्दरी है और रूपसी प्रेमिका जाल का अंधकार।

काव्य में प्रकृति के दूत या दूति के रूप में प्रस्तुत करने की परम्परा प्राचीन काल से ही रही है। कालिदास का मेघदूत, हरिवंश की पिंगल प्रभात की पवन दूति, घनानन्द के पवन दूत, भारती के 'मेघ दूत' आदि दूत रूप प्रकृति वर्णन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पंत ने इसी का अनुसरण करते हुए 'पावस ऋतु' शीर्षक कविता में कह उठते हैं —

"प्रकृति के यौवन का शृंगार, करेंगे कभी न बासी फूल।"

बादल दमयन्ती के समान पहाड़ कला को संदेश देने के लिए इसी प्रकार का रूप धारण करते हैं और उसे प्रिय का लाया संदेश देकर प्रसन्न दूत का कार्य करते हुए दिखाई देते हैं जो 'प्रिय संदेश लाया' कथन में भी सन्निहित है।

काव्य में प्रकृति का उपयोग उपदेशात्मक रूप में भी हुआ है। तुलसी ने रामचरितमानस में 'अवधी वर्णन' को इसी आधार पर किया है। पंत की 'परिवर्तन' शीर्षक कविता इसी प्रकार की कविता है। 'परिवर्तन' शीर्षक कविता में पुराने वर्षों के बिखर जाने तथा नूतन विकासों